

नवजात शिशुओं के शारीरिक वजन कम होने में उत्तरदायी जैव सांस्कृतिक का अध्ययन (विशेषकर मुजफ्फरपुर जिला के संदर्भ में)



डॉ०. आभा कुमारी

एम.ए., पीएच.डी. (गृह विज्ञान)

बी.आर.ए. बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर।

धरती से दूर हटकर मनुष्य का कुछ भी वैज्ञानिक अध्ययन संभव नहीं है। अतः इस शोध कार्य का क्षेत्र मुजफ्फरपुर नगर स्थित किया गया है। मुजफ्फरपुर जिला में श्री कृष्णा मेडिकल कॉलेज अस्पताल और सदर अस्पताल को प्रमुख शोध केन्द्र बनाया गया है इस संस्था में पैदा हुये नवजात शिशु के वजन और उनके परिवार से संबंधित तथ्यों पर शोध अध्ययन किया गया है।

श्री कृष्णा मेडिकल कॉलेज अस्पताल मुजफ्फरपुर नगर के रेलवे स्टेशन से लगभग 8 कि.मी. उत्तर की ओर स्थित है यह स्थल लगभग ग्रामीण इलाके में पड़ता है, अस्पताल के आस-पास अनेक गाँव स्थित है जैसे रूसुलपुर भीरवनपुर, बिजयी छपड़ा आदि।

मेडिकल कॉलेज चूँकि एक सरकारी संस्था है और इसमें मुफ्त में ईलाज किया जाता है, जिसके कारण आस-पास के ग्रामीण इलाके के लोग आते हैं, इसके साथ ही साथ दूर-दराज के इलाके से भी बहुत लोग आते हैं।

सदर अस्पताल मुजफ्फरपुर नगर के शहरी इलाके में स्थित है तो इसमें शहर के लोगों की भीड़, ग्रामीण लोगों की अपेक्षा अधिक होती है।

इकॉलॉजी शब्द की उत्पत्ति ग्रीक भाषा के ओइकोस शब्द से हुयी है जिसका अर्थ घर या गृह है परिस्थिति शास्त्र (इकॉलॉजी) शब्द का प्रयोग सन् 1966 में जर्मन विद्वान अनेस्ट हेकेल ने किया। साधारणतया परिस्थिति शब्द का प्रयोग भौगोलिक पर्यावरण के लिये किया जाता है यही कारण है कि अधिकांश परिस्थिति संबंधित अध्ययनों से यह ज्ञात करने का प्रयास किया जाता है कि साधारण प्रौद्योगिकी वाले सांस्कृति पर पर्यावरण का सीधा क्या प्रभाव पड़ता है।

हयुमत तथा सेल्जनिक के अनुसार परिस्थितिशाल्त्र जीवित वस्तुओं द्वारा अपने पर्यावरण के साथ किये जानेवाले अनुकूल के दौरान उनमें उत्पन्न होनेवाले पारस्परिक संबंधों का अध्ययन करता है।

सर्वप्रथम अमेरिकन समाजशास्त्री जीवित वस्तुओं द्वारा अपने कार्यालय के साथ किये जानेवाले अनुकूलन तथा उस अनुकूलन के दौरान उनमें उत्पन्न होनेवाले पारस्परिक संबंधों का अध्ययन करता है।

सर्वप्रथम अमेरिकन समाजशास्त्री पार्क एवं बगेल ने अपनी पुस्तक इण्ट्रोडक्शन टू द साईंस ऑफ सोशियोलॉजी में सामाजिक तथ्यों जैसे अपराध की दर एवं जनसंख्या की विशेषताओं के स्थानीय विवरण का अध्ययन किया इसी आधार पर उन्होंने समाजशास्त्र के क्षेत्र में क्षेत्रीय सम्प्रदाय का विकास किया था।

आगर्बन तथा निमकॉक के अनुसार मानवीय परिस्थितिशाल्त्र सामान्य परिस्थितिशाल्त्र की शाखा है, परिस्थितिशाल्त्र में जीवों और उनके पर्यावरण के बीच अन्तः सम्बन्धों का अध्ययन किया जाता है, लेकिन मानवीय परिस्थितिशाल्त्र में मानवप्राणी तथा उनके पर्यावरण के बीच अन्तः संबंध का अध्ययन किया जाता है इन्होंने मानवीय परिस्थितिशाल्त्र का क्षेत्र बहुत विकसित बतलाया है, उनके अनुसार मनुष्य के स्थानीय वितरण के संबंधित सभी समस्यायें तथा उसके सामाजिक जीवन का सम्पूर्ण क्षेत्री इसकी परिधि में आता है।

उपर्युक्त विवेचना के अनुसार पर हम सामाजिक परिस्थितिशाल्त्र को अन्तर्गत निम्नलिखित आवश्यक तत्व का उल्लेख कर सकता है:-

- (i) इसके अंतर्गत सह मान्यता निहित है कि मनुष्य के सामाजिक जीवन तथा उसकी भौतिक परिस्थितियों में एक महत्वपूर्ण पारस्परिक सम्बन्ध पाया जाता है।
- (ii) इसके अंतर्गत हम मानव समाज तथा सम्पूर्ण परिस्थिति के न केवल सीधे सम्बन्धों की ही व्याख्या करते हैं, बल्कि उन समाज की दशाओं का विवेचना करते हैं जो परोक्ष रूप से मानवसमाज और सम्पूर्ण परिस्थिति के पारस्परिक सम्बन्धों को प्रभावित करत है।
- (iii) इसके अंतर्गत मानव प्राणियों का उनके भौतिक पर्यावरण से समायोजन का अध्ययन किया जाता है।

(iv) इसके अंतर्गत यह भी मान्यता है कि मनुष्य के भौतिक पर्यावरण में न केवल प्राकृतिक पर्यावरण ही नहीं मानव समूहों, इनके संगठनों तथा इसमें अन्तर्गत आते हैं।

(v) सम्पूर्ण पर्यावरण के अंतर्गत पर्यावरण के अंतर्गत अतिरिक्त सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक पर्यावरण भी सम्मिलित होते हैं। सामाजिक परिस्थिति शास्त्र अपने विस्तृत अर्थों में इस तथ्य का अध्ययन करता है कि मानव प्राणी अपनी सम्पूर्ण परिस्थिति से किस प्रकार प्रभावित होते हैं तथा किस प्रकार प्रभावित करते हैं।

(vi) सामाजिक परिस्थिति शास्त्र की मुख्य समस्या सामाजिक समायोजन की समस्या है, जिसका अध्ययन सम्पूर्ण परिस्थिति के संदर्भ में किया जाता है।

सामाजिक परिस्थिति निर्माण आवश्यक तत्वों का उल्लेख स्टीनर और मेकेन्जी ने निम्नलिखित ढंग से किया है।

इतना जानने के बाद अब मुजफ्फरपुर जिला की परिस्थितिकी का वर्णन किया जा रहा है।

भौगोलिक अवस्थिति:

भारत के पूर्वोत्तर भाग में अवस्थित बिहार राज्य का एक महत्वपूर्ण जिला मुजफ्फरपुर है। यह जिला विश्व में लीची के लिए प्रसिद्ध है। इस जिला में बुढ़ी गंडक नहीं बहती है इस जिले की भूमि काफी नीची है, भूमि नीची होने के कारण बरसात के दिनों में बाढ़ आ जाती है।

नगर की सड़के तो पक्की हैं लेकिन देहातों में काफी कच्ची सड़कें हैं, जो वर्षा के दिनों में किचड़ और पानी से डूबी रहती है। आजकल शहर में भी सड़क निर्माण का कार्य चल रहा है जिसके कारण लोगों को काफी परेशानी का सामना करना पड़ रहा है।

अवलोकन:

प्रायः ऐसा देखा गया है कि कोई भी सामाजिक अनुसंधान कार्य तभी सफल होता जब तक उसमें निरीक्षण प्रविधि का प्रयोग न किया गया हो। गुडे एवं हैट ने लिखा है कि विज्ञान अवलोकन पर ही लौट कर आना पड़ता है।

वास्तव में कोई भी वैज्ञानिक किसी भी घटना अथवा अवस्था को तब तक स्वीकार नहीं कर सकता जब तक कि वह स्वयं उसका अपनी इन्द्रियों से निरीक्षण न कर ले।

पी०वी० युग के अनुसार “अवलोकन को नेत्रों द्वारा विषय वस्तु परीक्षण हेतु उपयुक्त माना जाता है।

अवलोकन प्राथमिक सामग्री के संग्रह की प्रत्यक्ष प्रविधि है। निरीक्षण का तात्पर्य उस प्रविधि से है जिसमें नेत्रों द्वारा नवीन तथा प्राथमिक तथ्यों का विस्तारपूर्वक संकलन किया जाता है। साथ ही इस प्रविधि में अन्वेषक अध्ययन के अंतर्गत आये समूह के दैनिक जीवन में भाग लेते हुये या उसे दूर बैठकर तथ्यों का संकलन करता है।

प्रस्तुत अध्ययन में अन्वेषक ने अनुसूची एवं अनुसूची से अलग होकर साक्षात्कार एवं अन्य समय में अवलोकन विधि का उपयोग किया है। तथ्य संकलन एवं प्रस्तुतीकरण शोध का आधार अध्ययन विषय से संबंधित वास्तविक तथ्य है।

निदर्शन:

अनुसंधान कार्य मुख्यतया निम्नलिखित दो पद्धतियों के आधार पर किया जा सकता है- जनगणना पद्धति और निदर्शन पद्धति। जनगणना पद्धति में अध्ययन क्षेत्र की समस्त इकाइयों का अध्ययन किया जाता है। क्षेत्र की प्रत्येक इकाई से सम्पर्क स्थापित कर अपेक्षित तथ्य संग्रहित किया जाता है। अध्ययन क्षेत्र की प्रत्येक इकाई से सम्पर्क स्थापित कर वांछित तथ्य संग्रह करने की विधि का सबसे उपयुक्त उदाहरण जनगणना है, जो प्रत्येक 10 वर्ष पर भारत सरकार द्वारा कराया जाता है परंतु आधुनिक अनुसंधानों में जनगणना पद्धति का उपयोग बहुत ही कम किया जाता है। समय एवं पूँजी को लेकर अध्ययन निदर्शन पद्धति के द्वारा ही सबसे उपयुक्त माना जाता है। कारण इसमें अध्ययन विषय के अंतर्गत आनेवाली सम्पूर्ण जनसंख्या अथवा सम्पूर्ण इकाइयों का अध्ययन नहीं किया जाता है बल्कि समग्र में से कुछ ऐसी इकाइयों का चयन कर लिया जाता है जिसमें समस्त आधारभूत विशेषताएँ विद्यमान रहती हैं। ऐसा करने में अध्ययनकर्ता का ध्यान समग्र में न बाँट कर कुछ पर ही केन्द्रित हो जाता है।

इस प्रकार कम समय एवं कम पूँजी में अध्ययन विषय का गहन अध्ययन निदर्शन पद्धति कहा जाता है। इस पद्धति की आधारभूत मान्यता है कि इन कुछ की विशेषताएँ सब की आधारभूत विशेषताओं का समुचित प्रतिनिधित्व करती है। यदि कुछ का चुनाव सतर्कतापूर्वक किया जाय।

अनुसंधान में वर्गीकरण की प्रक्रिया के उपरान्त सामग्री की और भी स्पष्ट तथा बोधगम्य बनाने के लिये तथ्यों का सारणीयन किया जाता है। पी० एल० हंस के अनुसार “विस्तृत अर्थ में, सारणीय तथ्यों का संकलित एवं व्यवस्थित व्यवस्था है।” यह एक ओर तथ्यों के संकलन और दूसरी ओर तथ्यों के अंतिम विश्लेषण के बीच की एक प्रक्रिया है।

डॉ० चतुर्वेदी-दो दिशाओं में पढ़ा जा सके इस रूप में कुछ पंक्ति या स्तंभों में लिखा जाना ही सारणीयन कहलाता है।

निम्न परिभाषा से स्पष्ट होता है कि जब एकत्रित तथ्यों का समुचित वर्गीकरण करके उन वर्गीकरण तथ्यों को एक तालिका के अंतर्गत कुछ स्तंभों तथा पंक्तियों में इस प्रकार व्यवस्थित ढंग से सजा दिया जाता है कि तथ्यों की विशेषताओं व तुलनात्मक महत्व और भी स्पष्ट हो जाता है जो इस प्रक्रिया को सारणीयन कहते हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची :

1. Bhowmic K.L and Gupta T.K. (1972), Effect of sex and birth order on birth weight of Bangali Offspring, Society and culture motilal, bonar sidas, Delhi.
2. Greenhill J.P. (1991) obstetrics from the original text of Joseph B Lec. W.B. Saunders Co. Philadelphia & London 12th Ed.
3. Ibid.
4. Gupta S. Srivastava G. Berry, AM and Khalri R.L. (2000) Mortality in low birth weight babies padiat Clinic India 94:39.
5. Gordon (1962) Quoted by Park-A Book on mortality Combine book Publishing house Kathmandu.
6. Gosh L.V. and Chandra Shekhar, C (1946) study of standards of pre-maturity of Indian infants Govt. of India Press, New Delhi.